



बढ़ते कदम

वर्ष-15
अंक-05
2016

पूर्व रेलवे, मालदा मंडल की सृजनात्मक हिन्दी ई-मासिकी



भारत के संविधान में राजभाषा

2. अनुच्छेद 344 के खंड (6) द्वारा दी गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए राष्ट्रपति ने समिति की रिपोर्ट पर विचार किया है और राजभाषा आयोग की सिफारिशों पर समिति द्वारा अभिव्यक्त राय को ध्यान में रखकर, इसके बाद निम्नलिखित निदेश जारी किए हैं।

3. शब्दावली -

आयोग की जिन मुख्य सिफारिशों को समिति ने मान लिया वे ये हैं-

- (क) शब्दावली तैयार करने में मुख्य लक्ष्य उसकी स्पष्टता, यथार्थता और सरलता होनी चाहिए;
- (ख) अन्तर्राष्ट्रीय शब्दावली अपनाई जाए, या जहां भी आवश्यक हो, अनुकूलन कर लिया जाए;
- (ग) सब भारतीय भाषाओं के लिए शब्दावली का विकास करते समय लक्ष्य यह होना चाहिए कि उसमें जहां तक हो सके अधिकतम एकरूपता हो; और
- (घ) हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं की शब्दावली के विकास के लिए जो प्रयत्न केन्द्र और राज्यों में हो रहे हैं उनमें समन्वय स्थापित करने के लिए समुचित प्रबन्ध किए जाने चाहिए। इसके अतिरिक्त समिति का यह मत है कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सब भारतीय भाषाओं में जहां तक हो सके एकरूपता होनी चाहिए और शब्दावली लगभग अंग्रेजी या अन्तर्राष्ट्रीय शब्दावली जैसी होनी चाहिए। इस दृष्टि से समिति ने यह सुझाव दिया है कि वे इस क्षेत्र में विभिन्न संस्थाओं द्वारा किए गए काम में समन्वय स्थापित करने और उसकी देखरेख के लिए और सब भारतीय भाषाओं को प्रयोग में लाने की दृष्टि से एक प्रामाणिक शब्दकोश निकालने के लिए ऐसा स्थाई आयोग कायम किया जाए जिसके सदस्य मुख्यतः वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकीविद् हों।

शिक्षा मंत्रालय निम्नलिखित विषय में कार्रवाई करें --

- (क) अब तक किए गए काम पर पुनर्विचार और समिति द्वारा स्वीकृत सामान्य सिद्धान्तों के अनुकूल शब्दावली का विकास / विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में वे शब्द, जिनका प्रयोग अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में होता है, कम से कम परिवर्तन के साथ अपना लिए जाएं, अर्थात् मूल शब्द वे होने चाहिए जो कि आजकल अन्तर्राष्ट्रीय शब्दावली में काम आते हैं। उनसे व्युत्पन्न शब्दों का जहां भी आवश्यक हो भारतीयकरण किया जा सकता है;
- (ख) शब्दावली तैयार करने के काम में समन्वय स्थापित करने के लिए प्रबन्ध करने के विषय में सुझाव देना, और
- (ग) विज्ञान और तकनीकी शब्दावली के विकास के लिए समिति के सुझाव के अनुसार स्थाई आयोग का निर्माण।

विषय वस्तु

प्रसंगवश—

—रामाशीष सिंह — 3

एक कहानी... —

— पुरुषोत्तम राजमणि 4

खून ही दगा... —

— विकास कुमार 6

दाम्पत्य जीवन.. —

— चंद्रभान 10

आज की शिक्षा पद्धति—

— सच्चिदानंद जिज्ञासु 12

पारसनाथ

— सुप्रिया राय 15

शरणागति की रक्षा

— शशि सुमन 16

मोबाइल की बैटरी

—रीतेश कुमार सिंह 17

काश यदि मैं..

— शैलेन्द्र राम 18

चित्र वीथिका 19-20

प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं
इससे संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

संपर्क सूत्र

संपादक, बढ़ते कदम

मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय

पूर्व रेलवे/मालदा

फोन- 72190/ 72192 (रेलवे)

Email – rajbhasha.malda@gmail.com

Web: www.er.indianrailway.gov.in

मकर संक्रान्ति

मकर संक्रान्ति भारत के प्रमुख त्यौहारों में से एक है। यह पर्व प्रत्येक वर्ष जनवरी के महीने में समस्त भारत में मनाया जाता है। इस दिन से सूर्य उत्तरायण होता है, अर्थात् उत्तरी गोलार्ध सूर्य की ओर मुड़ जाता है। इस त्यौहार का सम्बन्ध प्रकृति, ऋतु परिवर्तन और कृषि से है। ये तीनों चीजें ही जीवन का आधार हैं। परम्परा से यह विश्वास किया जाता है कि इसी दिन सूर्य मकर राशि में प्रवेश करता है। इस लिए इसे एक वैदिक उत्सव के रूप में मनाया जाता है।

इस दिन खिचड़ी का भोग लगाया जाता है। गुड़-तिल, रेवड़ी, गजक का प्रसाद बाँटा जाता है। प्रकृति के कारक के तौर पर इस पर्व में सूर्य देव को पूजा जाता है, जिन्हें शास्त्रों में प्रत्यक्ष भगवान कहा गया है। इन्हीं की स्थिति के अनुसार ऋतु परिवर्तन होता है और धरती अनाज उत्पन्न करती है, जिससे जीव समुदाय का भरण-पोषण होता है। इस पर्व को लगभग पूरे देश में एक अति महत्त्वपूर्ण धार्मिक कृत्य एवं उत्सव के रूप में मनाया जाता है।

संक्रान्ति का अर्थ है सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में जाना, अतः वह राशि जिसमें सूर्य प्रवेश करता है, संक्रान्ति की संज्ञा से विख्यात है। देवीपुराण में संक्रान्ति काल की लघुता का उल्लेख यों है- 'स्वस्थ एवं सुखी मनुष्य जब एक बार पलक गिराता है तो उसका तीसवाँ काल 'तत्पर' कहलाता है, तत्पर का सौवाँ भाग 'त्रुटि' कहा जाता है तथा त्रुटि के सौवें भाग में सूर्य का दूसरी राशि में प्रवेश होता है। सूर्य का दूसरी राशि में प्रवेश काल इतना कम होता है कि उसमें संक्रान्ति कृत्यों का सम्पादन असम्भव है, अतः इसकी सन्निधि का काल उचित ठहराया गया है।

मकर संक्रान्ति पर तिल को इतनी महत्ता क्यों प्राप्त हुई, कहना कठिन है। सम्भवतः मकर संक्रान्ति के समय जाड़ा होने के कारण तिल जैसे पदार्थों का प्रयोग सम्भव है। प्रत्येक संक्रान्ति पवित्र दिन के रूप में ग्राह्य है। पुराणों में भी संक्रान्ति व्रत का वर्णन मिलता है। एक दिन पूर्व व्यक्ति को केवल एक बार मध्याह्न में भोजन करना चाहिए और संक्रान्ति के दिन दाँतों को स्वच्छ करके तिल युक्त जल से स्नान करना चाहिए। इस दिन यथासामर्थ्य मनुष्य को स्नानआदि से निवृत्त हो कर दान आदि करना चाहिए, ऐसा हमारे शास्त्रों में बताया गया है।

— रामाशीष सिंह

निःशुल्क वितरण हेतु

संरक्षक

मोहित सिन्हा
मंडल रेल प्रबंधक

परामर्श

विजय कुमार साहू
अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी
एवं अपर मंडल रेल प्रबंधक

प्रधान संपादक

रामाशीष सिंह
राजभाषा अधिकारी(प्रा.)

संपादक

सच्चिदानंद
व. अनुवादक

कार्यकारी संपादक

इंद्र ज्योति राय
क. अनुवादक

सहयोग

दयामय दास, कनिष्ठ इंजीनियर

एक कहानी बचपन में सुनी

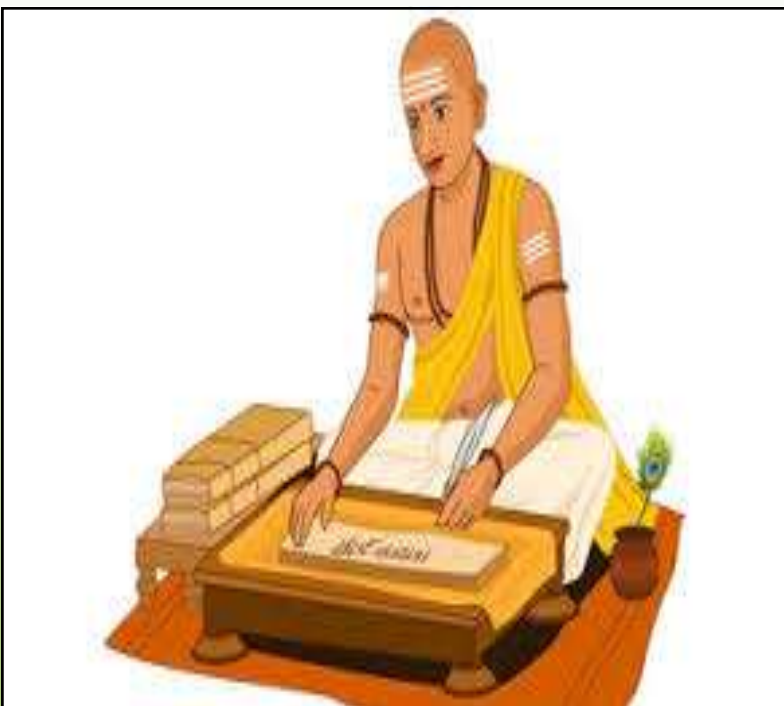
बचपन में एक कहानी सुनी थी। दूर किसी छोटे से गांव में गणेश भगवान का एक मंदिर था। उस मंदिर में गांव वालों ने एक पंडित जी को पूजा पाठ करने के लिए तथा मंदिर की देखभाल के लिए नियुक्त कर दिया। पंडित जी को भगवान गणेश पर बहुत आस्था थी। वह उन्हें अपना इष्ट, अपना गुरु, अपना आराध्य सब कुछ मानते थे। सुबह शाम नियमपूर्वक पूजा पाठ करते और तीनो टाइम भगवान गणेश को भोग लगाते। मजाल है जो कभी भी इसमें नागा हो जाए। अपने इष्ट की आराधना के अलावा और उनके जीवन में कोई काम नहीं था। बस दिन भर गणेश भक्ति में लीन रहते थे।

पंडित जी ही उस मंदिर के कर्ता धर्ता थे। गांव वालों को जब भी कोई परेशानी होती तो वह पंडित जी से सलाह मांगने जरूर जाते। पंडित जी भी उनकी मदद कर खुद को धन्य समझते। गांव वालों से जो थोड़ा बहुत मिल जाता उसी में अपना गुजारा करते। वैसे भी उन्हें दुनियादारी की इतनी समझ कहां थी वह तो बस अपने इष्ट की भक्ति में ही दिन रात लीन रहते थे। खैर, पंडित जी की एक पत्नी भी थी।

पंडित जी के स्वभाव के बिल्कुल उलट, पंडित जी जितने शांत स्वभाव के थे उनकी पत्नी उतनी ही कर्कशा और झगड़ालू थी। रोज पंडित जी जब भी घर आते उन्हें ताने और गालियों से उनका स्वागत करती। पत्नी का बस एक ही रोना था मेरी किस्मत ही फूट गई जो मेरी शादी तुमसे हो गई। पहनने के लिए दो जोड़े सही से कपड़े नहीं और गहनों का आज तक कोई मुंह नहीं देख पाया। तुम तो अपने भगवान को इतनी प्रिय हो उनसे कहो ना हमारा एक लाटरी लगवा दें जिससे हमारी गरीबी भी दूर हो जाए। असल में गरीबी की बात नहीं थी वह तो पंडितजी को ताना मारना था।

रोज-रोज के झगड़ों से पंडित जी भी परेशान थे। आखिर पंडितजी भी तो इंसान ही थे। एक दिन उनके सब्र का बांध टूट गया और उन्होंने सोच लिया कि आज तो भगवान गणेश से बोल कर एक लाटरी लगवा ही लेता हूं। कम से कम रोज रोज के इन झगड़ों से छुटकारा तो मिलेगा।

संध्या पूजन के पश्चात उन्होंने अपने दिल की बात गणेश जी के सामने रखी-- प्रभु दिन हो या रात हर पल मैंने तुम्हारी सेवा की है आपसे कभी कुछ नहीं मांगा पर आज मांग रहा हूं, अपने भक्त की लाज रख लेना और एक लाटरी लगवा देना। पंडित जी को पूरा विश्वास था कि अब तो उनकी लाटरी जरूर लगेगी। लाटरी की बात सोच सोच कर पंडितजी काफी उत्साहित थे क्योंकि आखिर इतने सालों से वह भगवान गणेश



की आराधना कर रहे हैं पर आज तक कभी कुछ नहीं मांगे और आज जब कुछ मांगा है तो गणेशजी अनसुना थोड़े ही कर देंगे।

पंडित जी अब दिन गिन रहे थे कि कब उनकी लाटरी लगे। एक दिन हुआ दो दिन हुआ और आज तो पूरे महीने बीत गए पर पंडितजी की लाटरी न लगी। आज पंडिताइन से फिर झगड़ा हुआ। तुम तो कहते थे कि तुम उनको बहुत प्रिय हो उनके सबसे बड़े भक्त हो पर वह कभी तुम्हारी बात नहीं टालेंगे, क्या मिला यह सब करके इतने दिनों से तुम जो उनकी पूजा पाठ कर रहे थे, नहीं लगी ना लाटरी, अब भी कहती हू कि यह पूजा-पाठ छोड़ो और कुछ और काम करो। आज तो पंडिताइन की एक-एक बात पर पंडित जी के दिल में सुई चुभ रही थी चुभनी भी चाहिए थी।

पहली बार किसी ने उनकी भक्ति पर सवाल उठाया था। उनके इस सवाल ने उनके सालों के विश्वास पर सवाल उठाया था। अब तो पंडित जी का विश्वास डोलने लगा। आज पहली बार उन्हें अपने पर संदेह हो रहा था। आखिर पंडित जी से नहीं रहा गया और वह दौड़ पड़े मंदिर की ओर और रोने लगे, पूछा -- इतने सालों की भक्ति का क्या यह सिला दिया प्रभु आपने। पहली बार कुछ मांगा था वह भी न दिया तोड़ दिया तुमने मेरे विश्वास को। सचमुच तुम एक पत्थर की मूर्त हो और गुस्से में आकर पंडित जी ने भगवान गणेश की मूर्ति को उठाकर तोड़ डाला।

मूर्ति खंडित होते ही एकाएक वहां गणेश भगवान साक्षात् प्रकट हो गए और बोले भक्त को जितनी आस्था अपने भगवान पर होती है उससे कहीं ज्यादा भगवान अपने भक्तों का ध्यान रखते हैं। मैं तो हर पल हर समय तेरे साथ था ही। तू ही है जो मुझे सही से समझ न पाया और रही बात लाटरी की तो वह तो तुम्हें तभी लगती जब तुम किसी लाटरी का टिकट खरीदते। अब जब तुम टिकट ही नहीं खरीदोगे तो लाटरी कैसे लगाऊंगा। इतना कहकर गणेशजी अंतर्ध्यान हो गए।

अब पंडितजी को पश्चाताप होने लगा कि कहां वह अपनी पत्नी की बातों में आकर अपने पर विश्वास पर आघात कर बैठे और अपनी सालों की भक्ति को गंवा बैठे। पर अब पछताने से क्या लाभ जब चिड़िया चुग गई खेत। कहानी बहुत सीधी सी है पर अगर इस कहानी के मूल में जाया जाए तो यह बहुत कुछ कहती है। हम सभी अपने घर या मंदिर में जा कर भगवान की पूजा करते हैं पर हम उन्हें धन्यवाद देने के बदले उनसे कुछ और मांगते हैं

कभी अपने लिए जाब मांगते हैं तो कभी अपने लिए धन मांग लेते हैं। हमारा व्यापार नहीं चल रहा है वह अच्छा से चले यह मांग लेते हैं। हमारी बीमारी ठीक हो जाए या जो भी हमारी मांगे हैं पूरी हो जाएं। पर हम यह भूल जाते हैं कि पंडित जी की तरह हमने भी लाटरी के टिकट तो खरीदी ही नहीं है। हमें लगता है बस बोल दिया तो वह जरूर पूरा कर देंगे पर हम उस समस्या के मूल में नहीं जाते। उसे सामने रखकर खुद सुलझाने की कोशिश नहीं करते हैं और अपनी बरसो की तपस्या को खत्म कर देते हैं।

कबीर की वाणी में रसरी आवत जात ते सिल पर परत निशान

पत्थर के ऊपर भी रस्सी बराबर खींचते रहने से निशान बनते रहते हैं तो ऐसी कौन सी परेशानी है जो हमारे पूरे प्रयत्न करने पर भी सही नहीं हो सकती। याद रखिए भगवान भी उनकी ही मदद करता है जो खुद की मदद करते हैं। इसलिए आज की इस कहानी को देने का अर्थ यही है कि अपने विश्वास को कभी गिरने नहीं देना है किसी भी मुसीबत के आने पर उस का डटकर सामना करना है बस यह याद रखना कि हर पल, हर समय वह हमें देख रहा है हमारे साथ है। बस जरूरत है तो हमें अपनी आस्था अपने विश्वास को बनाए रखने की और अपने कर्मों को निरंतर करते रहने की

खून ही दगा कर गया

शहर के जाने माने सर्जन साहब के बंगले पर एक वृद्ध व्यक्ति हाथ में कपड़े का झोला थामे गेट पर दरवान से कह रहा था-“ जाकर किशोर से कहो कि उसके पिता गांव से आए हैं।”

“भागता है कि नहीं यहां से तुम शहर के सबसे बड़े डाक्टर को अपना बेटा बताता है।”

“मैं सच कह रहा हूं किशोर मेरा ही बेटा है और मैं उसका बाप हूं , तुम मुझे अंदर जाने दो।”

“तुम्हें अंदर भेजकर मैं अपनी नौकरी को लात मार दूं। बड़ा आया डाक्टर साहब को अपना बेटा बनाने वाला। जा भाग जा।”

अभी यह वार्तालाप चल ही रही थी कि बंगले से डाक्टर साहब का पुराना नौकर शंभू भीतर से आया। वहां की बातचीत सुनकर उसने न जाने क्या सोचकर कहा-“रघुआ, तुम इस बूढ़े को अंदर जाने दे कहीं यह सचमुच डाक्टर साहब के पिता हुए तो तुम्हारी शामत आ जाएगी।”

रघुआ ने शंभू की बात मानकर बंगले का गेट खोल दिया। वह वृद्ध सज्जन अब अकड़ते हुए गेट के भीतर प्रवेश करने लगे। उनके चेहरे पर विजयी भाव दिखाई दे रहे थे। भीतर से उन्हें इस बात का आज कोई मलाल नहीं था उनके ही बेटे के घर में प्रवेश करने के लिए उसका दरवान गेट नहीं खोल रहा था।

सुमंत सिंह एक जाना पहचाना नाम था अपने इलाके में। वे हाई स्कूल के हेडमास्टर रह चुके थे। उनकी विद्वता की धाक आस पास के कई गांवों में थी। उनके जमाने में विद्यालय सचमुच विद्या देवी का मंदिर था। उनकी दृष्टि में अमीर या गरीब दोनों के बच्चों के लिए काफी स्नेह था। यही कारण था कि लोग उनकी बड़ी इज्जत करते थे।

उनको एक ही बेटा किशोर था। जैसा बाप वैसा बेटा। वह भी पढ़ने-लिखने में काफी होशियार था। उसकी पढ़ाई को देखकर मास्टर साहब ने उसे डाक्टरी की पढ़ाई करने के लिए महानगर में भेज दिया था। किशोर तेज तो था ही बड़ी आसानी से अपनी डाक्टरी की पढ़ाई भी उसने डिस्टिक्सन से पास किया। वहां से पास करने के बाद उसने किसी सरकारी विभाग में नौकरी कर ली। भाग्य ने साथ दिया। बड़ी जल्दी ही उसने सर्जरी में महारत हासिल कर ली। उसके हाथ से सर्जरी कराने के लिए पहले से ही नंबर लेना पड़ता था।

उसकी इस महारत का सरकारी सेवा में तो कोई बहुत बड़ा लाभ उसे नहीं मिल सका इसलिए उसने सरकारी नौकरी छोड़कर अपना प्राइवेट नर्सिंग होम खोल लिया। उसका नर्सिंग होम भी चल निकला। वहां देश विदेश से आ परेशन कराने के लिए लोग पहुंचने लगे। इस कार्य में उसने इतना पैसा कमाया कि कई एकड़ जमीन लेकर एक आलिशान हवेलीनुमा बंगला भी बना लिया।

कई कई नौकर चाकरों से वह बंगला हमेशा भरा रहता था। इस बीच उसकी व्यस्तता कुछ इस कदर बढ़ी कि वह अपने गांव भी जाना भूल गया। पहले तो मां की चिट्ठी का जवाब भी दे देता था पर अब वह भी कर पाना उसके वश में नहीं था। कुछ दिनों के बाद उसके अपने ही हास्पिटल की एक सिस्टर से प्यार हो गया तथा वह उसी से शादी भी कर लिया। किशोर ने इस बात को कोई अहमियत देना भी उचित नहीं समझा कि उसे विवाह के शुभ मौके पर अपने जन्मदाता मां-बाप को भी बुलाना चाहिए।

लगभग सात आठ महीने के बाद उसने मां को एक पत्र लिखा जिसमें उसने यह सूचित किया था कि वह अपने कार्यों में इस कदर व्यस्त रहा है कि अपनी शादी के मौके पर भी उनलोगों को बुला नहीं सका है। मां को मालूम कि इस बात से वह नाराज नहीं होगी। पिताजी को भी समझा लेगी। मैं फुर्सत मिलते ही पत्नी राधा के साथ आपलोगों के

दर्शन करूंगा। बेटा जो तीन वर्षों से घर नहीं आ रहा था, नहीं उनके किसी पत्र का ही जवाब भेजता था, वह अपनी शादी के अवसर पर भी उनलोगों बुलाना उचित नहीं समझा। मास्टर सुमंत जी का तो पत्र पढ़कर दिल सुलग कर रह गया। पर अपना ही खून जब पहचानने से इंकार कर दे तो इसमें किसका दोष है? वे मन मसोस कर रह गए।

किशोर की मां के सारे अरमान धरे के धरे रह गए। कितनी आशाएं थीं कि घर में बहू आएगी। उसके बच्चे होंगे। वह उनको दुलारेगी पुचकारेगी। पर अब वह क्या करेगी। बेटे ने तो अपनी मर्जी से शादी कर ली वह भी दूर परदेश में। पोते-पोतियों को खेलाने की बातें तो दूर वह बहू का ही मुंह अबतक नहीं देख सकी थी।

मास्टर साहब को एक गहरी चोट लगी थी। उनका वंश चलता तो शायद ऐसे बेटे को अपना औलाद कहना भी पसंद नहीं करते पर किशोर की मां का दिल तो उतना कड़ा नहीं हो सकता था। वह कुछ दिन रो धो कर शांत हो गई।

कई महीने इसी सोच विचार में बीत गए कि बेटे ने अगर मां-बाप को अपनी शादी में नहीं बुलाया तो क्या हुआ मां-बाप को ही उसके पास जाना चाहिए। किशोर की मां कई बार अपने पति से किशोर के पास जाने को कह चुकी थी पर वे थे कि वहां जाने के लिए तैयार ही नहीं होते।

एक दिन किशोर की मां ने जिद पकड़ लिया कि यदि वे अपने बेटे किशोर के यहां नहीं जाएंगे तो वही आज की गाड़ी पकड़ कर वहां चली जाएगी। मास्टर साहब ने अपनी पत्नी को काफी समझाया कि जिस बेटे के भीतर का जमीर मर चुका है वह जाने से भी उनकी कदर नहीं कर पाएगा।

पर मां का दिल इन व्यावहारिक तर्कों को सुनने को तैयार नहीं था। पत्नी की जिद के आगे उन्होंने हथियार डाल दिया और किशोर के पास जाने के लिए तैयार हो गए। गांव से किशोर की मां ने बेटे के लिए उसकी मनपसंद चीजों को बना कर तो दिया ही साथ ही बहू के लिए दो जड़ाऊ कंगन, एक सोने की चेन और न जाने कितने गहने पोटली में बांध कर झोले के भीतर डाल दिया।

अब समस्या किशोर के घर के पते की थी। अंतिम पत्र में किशोर ने लिखा था कि वह अपना पुराना डेरा बदल कर अपने लिए बनवाए गए नये बंगले में चला गया है पर उसका पता उसमें नहीं लिखा था। मास्टर साहब ने सोचा कि पुराने पते पर चलने से ही वहां के लोग उसके नये बंगले का पता अवश्य बता देंगे।

मास्टर साहब पुराने डेरे के पते पर पहुंचकर डाक्टर किशोर के बंगले का पता मालूम कर लिए थे। वे जब किसी से पूछे तो उसने बताया था कि यही डाक्टर किशोर का बंगला है। वे गेट पर आए तो दरवान ने ही रोक दिया। खैर शंभू ने किसी तरह उन्हें प्रवेश दिला दिया था।

शंभू उन्हें लेकर साहब के गेस्ट रूम में पहुंचा दिया। कई जगह भटकते भटकते मास्टर साहब काफी थक गए थे। उन्हें बड़ी जोरों की प्यास लग रही थी। उन्हें बंगले के गेट के बगल में लगे नल से ही पानी पीने की इच्छा हो रही थी पर यह सोचकर पानी नहीं पीए कि अब बेटे के यहां जब आ ही गए हैं तो घर में बैठ कर ही आराम से पानी पी लेंगे। गेस्ट रूम में शंभू उन्हें बिठाकर डाक्टर साहब के पास चला गया उस समय डाक्टर साहब अपने दोस्तों के साथ बैठकर ताश खेल रहे थे।

शंभू ने वहां जाकर डाक्टर साहब से कहा-“मालिक, आपके घर से आपके पिताजी आए हैं।” किशोर ने अपने मस्तिष्क पर जोर देते हुए गेस्ट रूम का पर्दा हटा कर देखा। वह अपने बाप को इतनी दीन हीन हालत में देखकर सकुचा गया।

तभी उसके किसी दोस्त ने पूछा-“यार, क्या यही तेरे पिताजी हैं?”

किशोर अपने दोस्त की बात सुनकर अपने पिता के गंदे कपड़ों और झोले को देखकर झेंप गया। उसे पता कि पिता को पिता कहने में शर्म आने लगी। कुछ पल वह यह सोचता रहा कि अपने दोस्तों के सामने क्या कहे। आखिर

उसने कहा-“नहीं यार, ये बुढ़ा मेरे घर का नौकर है।”

“सच मैंने भी यही सोचा था कि यह जरूर तुम्हारे घर का कोई नौकर ही होना चाहिए।”

“हां, यह नौकर ही है। बचपन में इसने हमें अपने गोद में खेलाया है इसलिए आज भी वह अपने को बाप ही समझता है। यह हमारे यहां हल चलाता है।”

मास्टर साहब इसके आगे कुछ भी सुन न सके। उनके शरीर में आग लग गई थी। यदि उनके वश में होता तो वे गुस्से में उस बंगले को ही आग लगा देते। पर इसमें उस बंगले का क्या दोष जब अपना ही खून पहचाने से इंकार कर रहा था।

पत्नी पर काफी गुस्सा आया। पर वह उस समय वहां थी थोड़े ही जो उस पर अपना गुस्सा उतारते। वे अब एक पल भी वहां रुक नहीं सके और अपना झोला वहीं छोड़ते हुए एक झटके के साथ गेस्ट रुम से बाहर निकल आए।

गेट पर वही रघुआ मिल गया। उसने इस बार बड़ी सहजता से पूछा-“क्या हुआ बाबा तुमसे हमने कहा था न कि तुम गलत जगह आ गए हो। पर तुम नहीं माने। खैर क्या हुआ तुम्हें तुम्हारे बेटे से भेंट हुई?”

मास्टर साहब तो खून का घूंट पीकर लौट रहे थे। वे उसको क्या जवाब देते बस इतना ही कह सके -“हां बेटे, तुमने ठीक ही कहा था, मैं गलत जगह आ गया था।”

रघुआ ने बंगले का गेट खोल दिया और मास्टर साहब बड़ी तेजी से वहां से निकल गए।

थोड़ी देर बाद डाक्टर किशोर ने अपने किसी नौकर को बुलाकर कहा-“देखो मेरे गांव से कोई हमारे घर का नौकर आया है उसे नास्ता पानी दे दो। उससे कहना कि साहब थोड़ी देर में आते हैं।”

वह नौकर जब नाश्ता पानी लेकर गेस्ट रूम में गया तो वहां कोई नहीं था। वह वहां से उलटे पैरों से लौटते हुए किशोर के पास गया और बताया कि वहां कोई आदमी नहीं बस एक झोला मात्र है।

अब तो किशोर की हवा खराब हो गई। वह समझ गया कि उसके पिता नाराज होकर वापस लौट गए हैं। वे ताश खेलना छोड़कर गेस्ट रूम में दौड़े हुए आए पर वहां तो बस एक झोला था। उसके साथ ही उसके सारे दोस्त भी आ गए थे।

सबने झोला को खोला तो उसमें उसकी मां के द्वारा दिए गहने तथा उसमें खाने के कुछ सामान थे। उसके भीतर एक चिट्ठी भी थी।

चिट्ठी के ऊपर लिखा था इसे सिर्फ मेरी बहू ही खोलेंगी। किशोर शायद खोल भी देता लेकिन उसके दोस्तों ने यह कहकर रोक दिया कि नहीं तुम इसे मत खोलो यह तो भाभी ही खोलेंगी।

राधा को बुलाया गया। उसने पत्र पढ़ना शुरू किया-“मेरी बहू भले ही मैंने तुम्हें अबतक नहीं देखा है लेकिन मेरे मन की आंखों ने तुम्हें अवश्य देख लिया है। तुम्हारे लिए मैं कुछ गहने तुम्हारे ससुर के हाथों भेज रही हूं जो तुम्हें तुम्हारी मुंह दिखाई पर हमें देनी थी।

तुम उसे अवश्य पहन लेना। किशोर मेरे दिल का टुकड़ा है उसका हमेशा ख्याल रखना और हां एक बात का ख्याल अवश्य रखना तुम्हारे ससुर बड़े स्वाभिमानी हैं जबतक तुम्हारे पास रहें तुम इनका अपमान नहीं करना। ये तो तुम लोगों के पास जा ही नहीं रहे थे पर मेरी जिद की वजह से जा रहे हैं कोई ऐसी वैसी बात मत करना जिससे हमें भेजने का अफसोस होने पाए। सदा सुहागिन रहो।

तुम्हारी सास
शारदा देवी।

राधा ने पत्र किशोर के सभी दोस्तों के सामने ही पढ़ दिया था इसलिए वह जिस झूठी शानों शौकत और प्रतिष्ठा के लिए अपने दोस्तों से अपने पिता को नौकर कहा था वह टूट कर कतरा कतरा हो गया था। किशोर का चेहरा तो देखने लायक था। तभी किसी ने कहा-“कैसे बेटे हो तुम जो अपने बाप को नौकर कहने में भी नहीं हिचकिचाए।...”

लोगों ने कुछ जली कटी सुना दिया। राधा भी अपने पति की इस हरकत से सन्न हो गई थी। कुछ पल बीतते बीतते किसी ने कहा-“खैर छोड़ो जो होना था वह तो हो गया अब भी तो अपने पिता को दूढ़ों और माफी मांग लो।”

सबलोग बंगले के गेट पर आए। रघुआ से पूछे तो उसने बताया कि वे तो कब के चले गए हैं। कुछ लोग उन्हें मोटर गाड़ी से खोजने भी गए पर उनका कहीं पता नहीं चला। स्टेशन पर भी उनका कोई सुराग नहीं मिला।

डाक्टर साहब का चैन खो गया था। उनकी यह गलती उनके दोस्तों यारों में नमक मिर्च के साथ पट गई। राधा ने कई बार उन्हें गांव जाकर मां बाप से माफी मांगने के लिये भी कहा पर किशोर की हिम्मत नहीं पड़ती थी अपने पिता के सामने जाने की।

मास्टर साहब भूखे प्यासे वहां से गाड़ी पकड़ कर गांव लौट आए। घर आने पर शारदा देवी ने बहुत पूछा-“किशोर कैसा है? बहू कैसी है, उसका बंगला कैसा है...?”

पर मास्टर साहब कोई जवाब नहीं देते। शारदा देवी का मन किसी अज्ञात आशंका से घबरा उठा। वे पूछ पूछ कर हार गई पर मास्टर साहब कुछ बताना ही नहीं चाहते थे। उन्हें न खाने की चिंता थी नहीं कोई काम की। वे तो अपमान की आग में जलते हुए राख हुए जा रहे थे।

तीन दिन में ही उन्होंने खाट पकड़ लिया। दवा दारू का भी कोई असर नहीं हो रहा था। पांचवे दिन उन्होंने शारदा को बुलाकर कहा-“देखो, अब मैं बचूंगा नहीं। लेकिन मेरे मरने का कारण तुम्हें बता देना चाहता हूं ताकि मेरी चिता को आग गांव के पंडित से दिलाना।” उन्होंने एक एक बात बताकर अपने प्राण त्याग दिये।

राधा के दवाब देने से किशोर लज्जित मन से डरते डरते गांव जाने के लिए तैयार हो गया। घर पहुंचने के पहले ही उसके पिता की लाश श्मशान घाट पहुंच गई थी। वहां की स्थिति समझते ही वह वहां से श्मशान घाट की ओर भागा।

श्मशान घाट पर लोगों की भीड़ हजारों में उपस्थित थी। मुखाग्नि देने हलौं लिए पंडितजी मंत्रोच्चार कर रहे थे। किशोर किसी अपराधी के भांति वहां आकर खड़ा हो गया। वह पिता को मुखाग्नि देने के लिए अग्नि उठाने के लिए बढ़ा लेकिन वहां उपस्थित जन समुदाय ने उसके हाथ से अग्नि लेकर पंडितजी को मुखाग्नि देने के लिए BE स्वर में कहा।

किशोर का दिल हाहाकार कर रहा था पर जन्म देने वाला पिता तो इस लोक को ही छोड़कर जा चुका था* जलती चिता के सामने वह बहुत रोया था पर जब उसके बाप ने ही उसे माफ नहीं किया तो लोग वैसे पातकी को क्यों माफ करते।

मास्टर साहब की चिता अभी ठंडी भी नहीं होने पाई थी कि किशोर के सामने आते ही मां ने यह कहते हुए दम तोड़ दिया-“बेटा, तुमने अपने बाप के साथ ठीक नहीं किया।”

किशोर चाहे जितनी भी प्रायश्चित्त कर ले पर उसके मां बाप उसके द्वारा किए गए अपमान को भुला नहीं सके और सदा के लिए ऐसे बेटे के लिए पछताना छोड़ गए।

- विकास कुमार

Y Y Y Y Y Y Y Y

दांपत्य जीवन कैसा हो

मानव जाति की उत्पत्ति का संबंध है सीधे तौर पर ब्रह्मा जी से है। पुरुष की उत्पत्ति ब्रह्मा जी के दाहिने जंघा से तथा स्त्री जाति की उत्पत्ति ब्रह्मा जी के बाएँ जंघा से हुई है ऐसा शास्त्रों में वर्णित है। ब्रह्मा जी के घर में पैदा होने वाले मानव जाति के प्रथम गुरु स्वयं ब्रह्मा जी एवं विद्या की देवी मां सरस्वती जी हैं। ब्रम्हलोक से शिक्षित होकर मानव जाति सृष्टि संचालन में सहायक बनकर पृथ्वी पर अवतरित हुई। यहां पृथ्वी पर आकर पति पत्नी के रूप में अर्थात् दांपत्य जीवन की शुरुआत किया। उसी सृष्टि संचालन की जंजीर की एक एक कड़ी के रूप में हम लोग अपनी अपनी भूमिका निभा रहे हैं।

आज 21वीं सदी का मानव जब अपने पूर्वजों का इतिहास पढ़ने की जरूरत करेगा तो पाएगा कि हमारे पूर्वजों का देश एक था, उनकी जाति एक थी और उनका धर्म एक था एवं उनका मजहब एक था। यह इतिहास वसुधैव कुटुंबकम की सार्थकता को सिद्ध करता है।

हमारे पूर्वजों ने यह आदर्श स्थापित किया है कि गृहस्थ आश्रम में रहते हुए दांपत्य जीवन जीते हुए भी ऋषि महर्षि एवं परम महर्षि के पद को प्राप्त किया जा सकता है। आज हम 21वीं सदी के मानव के दांपत्य जीवन का तुलनात्मक अध्ययन दूध और पानी के दांपत्य जीवन के साथ कर रहे हैं। पर हम इस उम्मीद के साथ यह लेख लिख रहे हैं कि इसको पढ़ने वाले हर व्यक्ति के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन की शुरुआत हो जाए



उदाहरण एक

एक गोपालक अपनी गाय का दूध निकालने के लिए गाय के पास जाता है तो बाल्टी में पानी लेकर जाता है क्योंकि वह जानता है कि यदि हमें दूध चाहिए तो दूध पानी दांपत्य के दूसरे जोड़े को अर्थात् पानी की उपस्थिति का होना बहुत जरूरी है। गोपालक पानी से जैसे ही गाय के

थन में छींटे मारता है तो जो दूध गाय के विभिन्न नसों में बिखरा हुआ था वह आपने दंपत्ति पानी का आलिंगन पाने के लिए व्याकुल हो उठता है और वह जहां भी जिस भी हालत में होता है पानी से गले लगने के लिए नंगे पैर दौरे पड़ता है।

इस प्रकार गाय के शरीर में उस समय जितना दूध होता है वह दूध पानी का स्वागत करने के लिए गाय के थन अग्रभाग में उपस्थित हो जाता है। गोपालक प्रसन्न होकर गाय का सारा दूध बाल्टी में निकाल लेता है। अर्थात् दूध अपनी जोड़े का सानिध्य पाने के लिए खुद को न्यौछावर कर देता है।

उदाहरण दो

अब गोपालक उस बच्चे कच्चे दूध से दही एवं घी बनाने के इरादे से भगोने में दूध डालकर गर्म करने लगता है। जब दूध को अधिक गर्मी बर्दाश्त नहीं होती तो वह उछल कूद मचाने लगता है। अब गोपालक को लगता है कि दूध देवता

नाराज हो रहे हैं अर्थात् हमारे भगोने से निकलकर बाहर भागना चाह रहे हैं तो वह उस दूध देवता को मनाने के लिए न तो पुलिस के पास जाता है और नहीं किसी रस्सी या जंजीर का सहारा लेता है बल्कि वह पानी के पास जाकर दोनों हाथ जोड़कर विनती करता है कि आपका दोस्त आपसे मिलना चाहता है। कृपया आप यथाशीघ्र चलने की तैयारी करें। पानी भी तुरंत जिस हालत में जहां था वहीं से उसी हालत में दूध से मिलने के लिए तैयार होकर चल देता है। गोपालक जैसे ही पानी को दूध का सानिध्य प्राप्त करा देता है दूध तुरंत शांत हो जाता है।

दूध पानी को आसन देकर स्वागत पूर्वक बैठते हुए एवं स्वयं भी आसन ग्रहण कर लेता है। यह आपसी प्रेम देखकर गोपालक की खुशी का ठिकाना नहीं रहता है। पर उधर पानी भी दूध का आलिंगन मिलने पर समझ जाता है कि हमारा दोस्त कितने कष्ट में है और घोषणा कर देता है कि हमारे रहते हुए अब आपको लेशमात्र भी कष्ट नहीं सहना पड़ेगा और जहां आग के ताप से दूध खौल रहा था वही पानी उस दूध को गोद में सुरक्षित कर लेता है और जलने वाली विधा को स्वयं धारण कर लेता है। और स्वतः जलने लगता है एवं जलते हुए भाप बनकर आसमान में उड़ कर अपनी जीवन लीला का अंत कर देता है। जबकि दूध को दही एवं मक्खन बनाकर सम्मानजनक पद प्राप्त कराने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ता है अर्थात् अहम भूमिका निभाता है। इस प्रकार पानी भी दूध की कृतज्ञता का सार निभाने में सफल हो जाता है।

उदाहरण तीन

दूध और पानी के दांपत्य जीवन में इतना प्यार एवं समर्पण देखकर उनके पड़ोस में रहने वाली खटाई के मन में

अधिक ईर्ष्या उत्पन्न हो गई और वह खटाई दूध और पानी के दांपत्य जीवन के सुख एवं शांति को भंग करने के इरादे से भगाने के खौलते हुए दूध में कूद गई फलस्वरूप दूध फट गया।

आज कितनी सुखद है सांझ
जब बांहों में होता है तेरा हाथ



आसमान में भाप बनकर उड़ चुके पानी ने सोचा कि हमारे मित्र के ऊपर विपत्ति आ गई है और अब उसकी मानहानि हो जाएगी। इसलिए वह दूध में शेष बचे पानी से बोला कि दूध के सम्मान हेतु तुझे अलग उपाय करना चाहिए और तुरंत पानी दूध से अलग हो गया। फटा दूध अब पनीर हो गया।

इस प्रकार गोपालक अचानक पनीर को देख कर बहुत प्रसन्न हुआ और हलवाई को बुलवाकर फिर पनीर से छेने की मिठाई बनवाना शुरू कर दिया। दूध को पहली बार उदाहरण दो में जहां पानी की अपनी दांपत्य जोड़े से सहायता से वीरचंद्र की उपाधि मिली थी वही अब

उदाहरण तीन में खटाई के विरोध के बावजूद पानी दूध को परमवीर चक्र का सम्मान दिलाने में सफल रहा।

इस प्रसंग से हमें यह संदेश मिलता है कि हम भी दूध पानी के दांपत्य जीवन से सीख लेते हुए अपने दांपत्य जीवन में हम भी आपसी प्रेम सौहार्द एवं समर्पण की भावना को जागृत करें तथा हम सुखपूर्वक जीवन यापन करते रहें

--चंद्रभान

आज की शिक्षा पद्धति कितनी सार्थक

मुझे तो आज की सारी शिक्षा पद्धति ही बेकार लगती है। स्कूल से लेकर विश्वविद्यालय तक की शिक्षा पद्धति कोई उपयोगी नहीं रह गयी है। हाँ, अंग्रेजी स्कूलों की बाढ़ भले ही आ गई है। यह शिक्षा पद्धति की नाकामी है, क्योंकि स्कूली परीक्षा पास करना बहुत सरल एवं सहज है। 100 अंकों में से 30 या 33 अंक ही तो लाना है। जिस प्रकार किसी भवन या अट्टालिका का मजबूत होना उसकी नींव की मजबूती पर निर्भर होती है, उसी प्रकार किसी भी भाषा रुपी अट्टालिका की मजबूती उसके व्याकरण पर निर्भर है और व्याकरण की पढ़ाई कक्षा एक से लेकर मैट्रिक तक सतही स्तर पर ही होती है। आदम जमाने से चली आ रही शिक्षा प्रणाली किसी विषय पर निबंध लिखो, संक्षेपण, वाक्य रचना मुहावरे, गद्य पद्य में कहानी, कविता का अर्थ, भावार्थ या व्याख्या आधारित प्रश्न पूछा जाता है और यही पद्धति एम.ए. तक कायम है।

इससे कितना लाभ छात्रों को होता है ? यह विचारणीय प्रश्न है। मेरे कहने का तात्पर्य है यदि कोई छात्र एम.ए. पास है तो उसे व्याकरण एवं रचना में भी एम.ए. स्तर की जानकारी (ज्ञान) होनी चाहिए; ऐसा न कि 10 पंक्ति लिखें तो 10 तरह की अशुद्धियाँ हो, हिज्जे संबंधी गलती, व्याकरण संबंधी गलती अर्थात् लिंग दोष तथा कुछ भाव स्पष्ट न होना आदि से हैं। इसमें सबसे बड़ी गलती तो शिक्षा पद्धति की है। मोटी-मोटी पुस्तकों में से सिर्फ 5-7 प्रश्नों के उत्तर लिखकर प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हो जाना क्योंकि समूची पुस्तक का सम्यक ज्ञान इस पद्धति द्वारा नहीं हो पाता है। इस शिक्षा पद्धति में कुछ - कुछ सुधार मैट्रिक स्तर की पढ़ाई में किये जाने की जरूरत है, परन्तु ऊँची कक्षाओं में अब भी लकीर के फकीर बने हुए हैं।

जब मैं इंटर का छात्र था तो एक पत्र मेरा लॉजिक यानि तर्कशास्त्र था। एक प्राध्यापक महोदय एक ही प्रश्न-क्या तर्कशास्त्र विज्ञान है या कला को लगभग 6 महीने तक पढ़ाते रह गये परन्तु उनका लेक्चर शेष नहीं हुआ। यह कोरी गप्पबाजी नहीं हकीकत है। उनके संबंध में सुना था कि वे बहुत बड़े विद्वान हैं तो क्या यही विद्वता है ? मान लीजिए इस प्रश्न का उत्तर सौ पेज में परीक्षा में लिखा जाए तो क्या परीक्षक महोदय निर्धारित अंक 20 में से 20 ही तो देंगे ; 40 अंक तो दे नहीं सकते तो क्या वह छात्र परीक्षा में पास होंगे ? ऐसी शिक्षा से क्या लाभ ? और ऐसे विद्वान प्राध्यापक किस काम के ? यह समस्या साइंस ग्रुप में नहीं है, लिटरेचर में ही है, चाहे वह हिन्दी लिटरेचर हो, बंगला लिटरेचर हो अथवा अंग्रेजी लिटरेचर।

एम.ए. शीर्ष स्तर की पढ़ाई है। एम.ए. में हिन्दी भाषा लेकर पढ़नेवाले छात्रों को 8 पेपर पढ़ना होता है। इन विषयों को पढ़कर छात्र क्या ज्ञान हासिल करता है ? यह ज्वलंत प्रश्न है। मान लीजिए कोई व्यक्ति किसी रेल इंजन के चालक के साथ रहकर रेल गाड़ी चलाना सीख लें तो उसे अपने जीवन में इससे क्या लाभ मिलेगा ? कुछ नहीं जबतक कि उसकी नौकरी रेल विभाग में ड्राइवर पद पर न हो जाती हो लेकिन वही व्यक्ति यदि कार चलाना सीख लेता है, तो वह इसे सीखकर अपनी जीविका चला सकता है क्योंकि किसी भी शहर में लाखों की संख्या में कार चालकों की जरूरत होती है। ठीक उसी प्रकार एम.ए. (हिन्दी) में आठ विषयों को 4 विषयों में ही समाहित कर अन्य विषयों जैसे- प्रूफ रीडिंग, पत्रकारिता, पुस्तक संपादन, हिन्दी टाइपिंग, शब्दकोष निर्माण, एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद, किसी विषय वस्तु पर स्पीच तैयार करना, किसी विषयों की समीक्षा करना, अच्छा वक्ता या लेखक बनाने आदि विषयों की भी

जानकारी दी जानी चाहिए ताकि छात्र परीक्षा पास कर बेरोजगार न रहने पायें। दूसरे विकल्प उनके पास हो, जिसमें उनकी रुची हो, वे अपनाकर अपनी जीविका चला सके तथा सरकारी नौकरी के भरोसे बैठे न रहे। ऐसे रोजगार मूलक शिक्षा की व्यवस्था होनी चाहिए। प्रेमचंद का गोदान पढ़कर क्या किसी को नौकरी मिलेगी? हाँ, जो शिक्षक बन जायेंगे उसे भले गोदान पढ़ाने में काम आ सकता है। शेष लोगों के लिए इस किस्से से क्या लाभ होगा?

पी.एच.डी. कर लेने वाले भी बेरोजगार हैं। परन्तु एक साधारण आई टी आई पास छात्र की नौकरी आसानी से कल कारखाने में हो जाती है क्योंकि उसे बुनियादी शिक्षा दी जाती है, किताबी ज्ञान की शिक्षा नहीं। आज हमारी शिक्षा पद्धति व्यवहारिक न होकर सिर्फ थ्योरी रह गयी है जो किसी काम के लायक नहीं है। उदाहरण के लिए साइकिल चलाने के संबंध में किताब पढ़कर कोई साइकिल चलाना सीख सकता है क्या? कदापि नहीं, उसे मैदान में साइकिल ले जाकर दो-चार दिनों तक अभ्यास करना होगा तभी वह साइकिल चलाने की कला सीख पायेगा अन्यथा साइकिल चलाने संबंधी मोटी-मोटी किताब पढ़कर नहीं। ठीक उसी प्रकार हमारी शिक्षा पद्धति चाहे वह स्कूली शिक्षा हो या विश्व विद्यालयी शिक्षा सभी अव्यवहारिक है। इस शिक्षा से लोग शिक्षित तो हो सकते हैं, फर्निट अंग्रेजी तथा लच्छेदार हिन्दी बोल सकते हैं परन्तु अपनी जीविका नहीं चला सकेंगे। दो जून की रोटी की व्यवस्था नहीं कर पायेंगे तभी तो आज शिक्षित बेरोजगारी दिनों-दिन बढ़ती जा रही है।

आज भी प्रैटिकल नॉलेज वाले बेरोजगार नहीं हैं। साधारण सा एक राज मिस्त्री, बिजली मिस्त्री, काठ मिस्त्री आदि को ही लीजिए कहीं बैठा निकम्मा आपको नहीं मिलेगा। रोज 300-400 रुपये तक कमा लेता है परन्तु, एम.ए. पास छात्र के लिए ट्यूशन पढ़ाने के सिवाय कोई कार्य समाज में नहीं है। सरकार को चाहिए कि रोजगार परक शिक्षा प्रणाली की व्यवस्था करें भाषा ज्ञान के साथ-साथ उसमें इतनी दक्षता हो जाये कि वह परीक्षा समाप्त करते ही स्वयं अपनी मर्जी से मनपसंद कार्य कर जीविकोपार्जन करने लगे।

इसके साथ ही साथ शिक्षा संस्थान को राजनीति, भाई भतीजावाद से मुक्त होना चाहिए, तभी देश का, राष्ट्र का, तथा छात्र का कल्याण होगा अन्यथा हम ऊँची से ऊँची कागजी डिग्री भले गले में लटकाए घूमते रहेंगे, पर एक वक्त की रोटी की भी जुगाड़ हम इस तरह की शिक्षा से नहीं कर पायेंगे इस संबंध में 7 अक्टूबर /2015 को कोलकाता से प्रकाशित प्रभात खबर समाचार पत्र देखा जाए —“ उत्तर प्रदेश में चपरासी के 368 पदों के लिए 23 लाख आवेदन आये। 16000 रुपये महीने की नौकरी के लिए आवेदन देने वालों में डेढ़ लाख ग्रेजुएट और 225 डॉक्टरेट भी थे। यह भारत की बेरोजगारी की समस्या को दिखाता है लोगों के पास डिग्री है, लेकिन नौकरी लायक कुशलता नहीं है।”

इस नाकामी की जिम्मेदारी भारत सरकार, शिक्षामंत्री तथा शिक्षा प्रणाली के नीति निर्धारकों की हैं। मेरे ख्याल से शिक्षा को तीन स्तर पर बाँटा होना चाहिए। पहला अनिवार्य स्तर, दूसरा रोजगार परक स्तर, तथा तीसरा प्रतिष्ठा मूलक स्तर अनिवार्य स्तर शिक्षा के अन्तर्गत कक्षा 8 तक की पढ़ाई की व्यवस्था हो, अर्थात् 8 कक्षा तक हर देशवासी को पढ़ना अनिवार्य कर देनी चाहिए।

इसमें त्रिफर्मूला आधारित शिक्षा की व्यवस्था हो अर्थात् अपनी मातृभाषा, राष्ट्रभाषा, तथा अंतरराष्ट्रीय भाषा अंग्रेजी पढ़ने लिखने का सम्यक ज्ञान के साथ-साथ तथा साधारण अंकगणित, बीजगणित का ज्ञान हो। दूसरा रोजगार परक स्तर की पढ़ाई 10 कक्षा तक निर्धारित हो, इसके अन्तर्गत पढ़ाई के साथ-साथ स्वास्थ्य संबंधी जानकारी, कुटीर उद्योग, आई टी आई के अंतर्गत अनेकों ट्रेडों की भी पढ़ाई या प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए ताकि छात्र पढ़कर स्वरोजगार कर सके, बेरोजगार नहीं रहे। तीसरा स्तर बी.ए./एम.ए स्तर की पढ़ाई जिसे लेक्चरर, टीचर, वकील वैज्ञानिक, डॉक्टर, इंजीनियर आदि बड़े पदों पर वहाल होना हो, वैसे छात्र इस अंतिम स्तर की पढ़ाई करेंगे सबको इतनी दूर तक पढ़ने की कोई जरूरत नहीं।

इस प्रकार की व्यवस्था न होने के कारण ही आज छात्र पढ़ते जाते हैं किसी तरह पास करते जाते हैं भले ज्ञान हो या न हो ,और बी.ए, एम.ए. पास कर बेरोजगार हो जाते हैं क्योंकि 80 % छात्रों में इतनी दूरी तक पढ़ने की काबिलियत ही नहीं होती फिर भी पढ़ रहे हैं । सरकार को इस दिशा में प्रभावी कदम उठाने की जरूरत है । केवल रटन्तू पढ़ाई से काम चलने वाला नहीं है । सदियों से चली आ रही एम.ए की डिग्री भले पा गई हो परन्तु ज्ञान के नाम पर खाक है । इसका ज्वलंत उदाहरण 17/05/2015 को ‘सम्मार्ग’ समाचार के पृष्ठ 9 पर प्रकाशित समाचार देखा जा सकता है

शीर्षक- गाय पर निबंध नहीं लिख पाया अध्यापक, अदालत ने जताई नाराजगी

“जम्मू कश्मीर उच्च न्यायालय ने एक अध्यापक की काबिलियत परखने के लिए एक खुली अदालत में उसकी परीक्षा ली लेकिन वह इस परीक्षा में बुरी तरह असफल रहा । न्यायमूर्ति मुजफ्फर हुसैन अत्तर ने अदालत के एक वरिष्ठ वकील से प्रति वादी शिक्षक को अंग्रजी से उर्दू और उर्दू से अंग्रजी में अनुवाद के लिए एक आसान पंक्ति देने को कहा लेकिन अध्यापक अनुवाद नहीं कर पाया । इसके बाद अध्यापक से उर्दू में गाय पर निबंध लिखने को कहा गया लेकिन वह ऐसा भी नहीं कर पाया । उसने अदालत के कक्ष के बाहर नबंध लिखने की अनुमति मांगी जो उसे दे दी गई । इसके बावजूद वह अनुत्तीर्ण रहा ।”

भागलपुर से प्रकाशित हिन्दुस्तान दिनांक 13/11/2015 के समाचार के पृष्ठ 06 पर पढ़ा जाए ।

शीर्षक - फोर्टी लिखना नहीं जानते विधि शिक्षक-

“तिलकामांझी भागलपुर विवि के बी.एस.सी पार्ट थ्री जूलोजी अनिस की कॉपी के मूल्यांकन में बड़ी लापरवाही सामने आई है... शिक्षक ने 54 को शब्दों में फोर्टी फोर लिखा है जिसका हिज्जे भी गलत है । फोर्टी का हिज्जे एफ ओ आर टी वाई की जगह एफ ओ यू आर टी वाई लिखा है । ” यह भारतीय शिक्षा पद्धति की पोल खोलने के लिए ही काफी है कि विधि शिक्षक को फोर्टी तथा अध्यापक को गाय पर निबंध नहीं लिखने आता है तो उनके द्वारा पढ़ाया गया छात्र भविष्य में क्या करेगा ? यह विचारणीय प्रश्न है ।

उत्तर प्रदेश सरपंच के प्रत्याशी को देश का प्रधानमंत्री तथा राष्ट्रपति तक का नाम पता नहीं समाचार पत्र पढ़कर यह सब ज्ञात हुआ । इसके लिए कौन जिम्मेवार है ? आरक्षण ,भाई भतीजावाद, पैराटीचर, राजनेता, शिक्षा विभाग, आदि । आरक्षण के आधार पर चुने गये शिक्षक भला क्या पढ़ाएंगे ? जिसने खुद अपने जीवन में कभी पढ़ा ही नहीं ,विश्वविद्यालय में सबदिन गुंडा गर्दी की, बाद में पार्टी पौवा कर किसी तरह शिक्षक बन गये इससे समाज क्या उम्मीद कर सकता है ? इसे बदलने की जरूरत है । आरक्षण पर तुरंत रोक लगाने की जरूरत है । इसके लिए दृढ़संकल्पी होना होगा, अपना स्वार्थ छोड़ना होगा । देश के प्रति जज्बा पैदा करना होगा अपने लाभ नुकसान की बात छोड़े बगैर इसे हम समाज तथा देश से नहीं हटा पायेंगे । निम्न कविता आज की शिक्षा पद्धति तथा विद्यालय की सच्ची तस्वीर पेश करती है ।

स्कूल मैंने हजारों देखा

रंग-बिरंगे अट्टालिकाओं में देखा -

लाल-पीले, उजले छात्रों को पढ़ते देखा

मिस-बहन जी पर फैशन की बहारों देखा ।

स्वेटर की बुनाई और हँसी-मजाक में मस्त देखा

यससर,जी सर, मिस्टर-सिस्टर, कोलाहल सुना ,

पाँच सौ, हजार रुपये तक मासिक फीस देखा

प्रचार के बड़े-बड़े साईनबोर्ड

पम्पलेट छपते-बँटते देखा

दलालों के माइक से

डिसीप्लीन,सुन्दर पढ़ाई का गुणगान सुना ।

सबकुछ देखा-सुना;

पर पढ़ाई नादारत देखा !

छात्रों की पीठपर पुस्तकों की ‘गांठ’ देखा !

मगर, प्रोग्रेस के नाम पर खाक देखा !!

— सच्चिदानंद ‘जिज्ञासु’

पारसनाथ

पारसनाथ जाने के लिए झारखंड राज्य में अवस्थित गिरीडीह स्टेशन से पहाड़ की तलहटी जिसे मधुवन कहा जाता है तक पहले पहुंचना पड़ता है। शिखरजी या सम्मेद शिखर जैन धर्म के अनुयायियों के लिए एक महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल है। पारसनाथ पर्वत विश्व प्रसिद्ध है। यहाँ हर साल लाखों जैन धर्मावलंबियों आते हैं, साथ-साथ अन्य पर्यटक भी पारसनाथ पर्वत की वंदना करना जरूरी समझते हैं। स्टेशन से पहाड़ के तलहटी की दूरी 30 कि.मी. है। पहाड़ की चढ़ाई उतराई तथा यात्रा करीब 27 कि.मी. की है।

सम्मेद शिखर जैन धर्म को मानने वालों का एक प्रमुख तीर्थ स्थान है। यह जैन तीर्थों में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। जैन धर्मशास्त्रों के अनुसार जैन धर्म के 24 में से 20 तीर्थंकरों और अनेक संतों व मुनियों ने यहाँ मोक्ष प्राप्त किया था। इसलिए यह 'सिद्धक्षेत्र' कहलाता है और जैन धर्म में इसे तीर्थराज अर्थात् 'तीर्थों का राजा' कहा जाता है।

जैन धर्म शास्त्रों में लिखा है कि अपने जीवन में सम्मेद शिखर तीर्थ की एक बार यात्रा करने पर मृत्यु के बाद व्यक्ति को पशु योनि और नरक प्राप्त नहीं होता। यह भी लिखा गया है कि जो व्यक्ति सम्मेद शिखर आकर पूरे मन, भाव और निष्ठा से भक्ति करता है, उसे मोक्ष प्राप्त होता है और इस संसार के सभी जन्म-कर्म के बंधनों से अगले 49 जन्मों तक मुक्त रहता है। यह सब तभी संभव होता है, जब यहाँ पर सभी भक्त तीर्थंकरों को स्मरण कर उनके द्वारा दिए गए उपदेशों, शिक्षाओं और सिद्धांतों का शुद्ध आचरण के साथ पालन करें।

पारसनाथ 23 वें तीर्थंकर थे जिनके बाद इस जगह का नाम पारसनाथ पड़ा। जैसे-जैसे पर्यटक पहाड़ी पर आगे बढ़ते हैं, रास्ते में आने वाले सभी मंदिरों और गुफाओं को पार करते हैं जो तीर्थंकरों को समर्पित हैं। कुछ मंदिर 2000 साल से भी पहले के माने जाते हैं। इस सदियों पुरानी जगह के विपरीत, यहाँ के मंदिर आधुनिक दृष्टिकोण के हैं। पारसनाथ की पहाड़ियाँ और इसके घने जंगल के बीच उसरी जलप्रपात मन को बरबस अपनी ओर आकर्षित कर लेते हैं।

इसे 'पारसनाथ पर्वत' के नाम से भी जाना जाता है। पारसनाथ की पहाड़ियाँ या श्री सम्मेता जी, समुद्र के तल से लगभग चौवालिस सौ मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। यह गिरीडीह की पहाड़ी श्रृंखला है जिसका सर्वोच्च शिखर 1350 मीटर ऊँचा है। यह केवल झारखंड की ही सबसे ऊँची चोटी नहीं है बल्कि हिमालय के दक्षिणी हिस्से का सबसे उंचा पर्वत है। इसे जैनियों का सबसे पुराना मंदिर माना जाता है। यह जैनियों के लिए सबसे महत्वपूर्ण और पवित्र तीर्थों में से एक है।

पारसनाथ में ज्यादातर संथाल जाति के लोग निवास करते हैं, जो इस पहाड़ी को मरंग बुरु देवता के रूप में पूजते हैं। मध्य अप्रैल में बैसाखी के दौरान ये लोग पूर्णिमा के दिन शिकार उत्सव मनाते हैं। इस पहाड़ी पर उत्तर की दिशा से आसानी से चढ़ा जा सकता है। 27 किलोमीटर की दूरी पर्वतारोहियों को तय करनी होती है। जो पर्यटक चलने में असमर्थ होते हैं वे 'डोली वालों' की मदद ले कर यात्रा पूरी कर सकते हैं।

इस प्रकार यह क्षेत्र बहुत पवित्र माना जाता है। इस क्षेत्र की पवित्रता और सात्विकता के प्रभाव से ही यहाँ पर पाए जाने वाले शेर, बाघ आदि जंगली पशुओं का स्वाभाविक हिंसक व्यवहार नहीं देखा जाता। इस कारण तीर्थयात्री भी बिना भय के यात्रा करते हैं। संभवतः इसी प्रभाव के कारण प्राचीन समय से कई राजाओं, आचार्यों, भट्टारक, श्रावकों ने आत्म-कल्याण और मोक्ष प्राप्ति की भावना से तीर्थयात्रा के लिए विशाल समूहों के साथ यहाँ आकर तीर्थंकरों की उपासना, ध्यान और कठोर तप किया।

जैन नीति शास्त्रों में वर्णन है कि जैन धर्म के 24 तीर्थंकरों में से प्रथम तीर्थंकर भगवान 'आदिनाथ' अर्थात् भगवान ऋषभदेव ने कैलाश पर्वत पर, 12वें तीर्थंकर भगवान वासुपूज्य ने चंपापुरी, 22वें तीर्थंकर भगवान नेमीनाथ ने गिरनार पर्वत

और 24वें और अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर ने पावापुरी में मोक्ष प्राप्त किया। महावीर स्वामी का प्रादुर्भाव इनके बाद ही हुआ था।

जैन तीर्थंकरों में ये सबसे लोकप्रिय हुए और इनके नाम पर इन पर्वत श्रेणियों को पारसनाथ की पहाड़ियों से जाना जाता है। इन पहाड़ियों पर अन्य तीर्थंकर यथा अजितनाथ, संभवनाथ, अभिनंदन नाथ, सुमतिनाथ, पद्मा प्रभा, सुपार्श्वनाथ, चन्द्रप्रभा, सुविधीनाथ, शीतलनाथ, श्रेयंश्राथ, विमलनाथ, अनंतनाथ, धर्मनाथ, शान्तिनाथ, कुन्थुनाथ, अरनाथ, मल्लिनाथ, मुनिसुव्रत, नेमिनाथ के भी टोंक हैं, जहाँ इन सभी तीर्थंकरों ने सिद्धि और मोक्ष की प्राप्ति की।

इनमें से कई ने तो कायोत्सर्ग अवस्था (खड़े अवस्था में) सिद्ध हुए और मोक्ष प्राप्त किये। प्रत्येक टोंक पर सम्बद्ध तीर्थंकर के बारे सारी जानकारी दी हुई है- यथा इनके नाम, इनका जीवन काल, इनके माता पिता और वंश का नाम, इनके प्रतिनिधि वृक्ष और प्राणी और इनकी आयु इत्यादि। श्रद्धालुजन प्रत्येक टोंक पर प्रसाद चढ़ा, मथा टेक आगे बढ़ते जाते हैं। जैन धर्म के 23वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ ने भी इसी तीर्थ में कठोर तप और ध्यान द्वारा मोक्ष प्राप्त किया था। अतः भगवान पार्श्वनाथ की टोंक इस शिखर पर स्थित है।

— सुप्रिया राय

शरणागति की रक्षा

एक थे राजा शिवि। एक दिन वह वन में घूम रहे थे कि एक कपोत फड़फड़ाता हुआ उनकी गोद में आ गिरा। कपोत बड़ा डरा हुआ था। एक बाज उसका पीछा कर रहा था। बाज तो कपोत का बैरी है ही, वह कपोत पर झपटने ही वाला था कि कपोत राजा शिवि की शरण में आ गया। उसके पीछे-पीछे बाज भी तुरन्त वहाँ पहुँच गया। बाज ने राजा से कहा-“यह कपोत मुझे दे दो।”

“क्यों?” राजा ने पूछा।

यह मेरा आहार है। कितनी देर से मैं इसका पीछा कर रहा हूँ। राजा ने कहा-“ मैं कपोत तुम्हें कैसे दे दूँ, यह मेरी शरण में आया है। इसकी रक्षा करना मेरा धर्म है।

बाज बोला-“लेकिन क्या यह भी आपका धर्म है कि किसी के मुँह से उसका भोजन छीन लिया जाए? आप जानते हैं कि कपोत मेरा आहार है। यदि यह मुझे न मिला तो मैं भूख से मर जाऊँगा। मेरी पत्नी और मेरे बच्चे भी भूख से मर जायेंगे। एक छोटे-से पक्षी की रक्षा के बदले इतने प्राणियों की मृत्यु का जिम्मेदार कौन होगा?”

राजा शिवि सोच में पड़ गये। लेकिन शरण में आये हुए कपोत को वह बाज का आहार बनने के लिए कैसे छोड़ें। वह बोले-“तुम इस कपोत के बदले में जो चाहे ले लो।”

बाज बोला-“यदि कपोत आपको इतना ही प्यारा है तो इसके बराबर आप अपने शरीर से मांस काटकर मुझे दे दें* मेरी भूख मिट जायेगी। राजा शिवि ने कपोत की रक्षा के लिए यह भी स्वीकार कर लिया। उन्होंने एक तराजू मंगवाया। तराजू के एक पलड़े में कपोत को रखा और दूसरे में अपने शरीर का मांस काट कर रखा। लेकिन कपोत का पलड़ा भारी रहा। राजा ने अपने शरीर से और अधिक मांस काटा और पलड़े पर रखा। लेकिन फिर भी कपोत का पलड़ा भारी ही रहा।

राजा के लिए बड़ी विचित्र बात थी। वे अपने शरीर का मांस काटते जाते थे और तराजू पर रखते जाते थे। लेकिन वह कपोत के बराबर नहीं होता था, उससे कम ही रहता था। अन्त में राजा स्वयं ही तराजू पर बैठ गए और कहने लगे-“लो मेरा सारा शरीर खाकर अपनी भूख मिटाओ।”

यह कैसे हो सकता था कि एक नन्हा सा कपोत मनुष्य के शरीर से भी भारी हो? बात वास्तव में यह थी कि वह बाज राजा इन्द्र था और कपोत का रूप धारण किये हुए थे-अग्नि देवता। दोनों बाज कबूतर बनकर राजा शिवि की परीक्षा लेने आये थे। राजा शिवि उस परीक्षा में पूरे उतरे और संसार के सामने शरणागत की रक्षा करने का अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत किया।

— शशि सुमन

मोबाइल फोन की बैटरी

मोबाइल फोन आज की ऐसी आवश्यकता है कि इसके बिना किसी का काम ही नहीं चल रहा। पर इसे नियमित आधार पर चालू रखने के लिए चार्ज करना पड़ता है। बार बार चार्ज करने से या यात्रा के समय चार्जिंग प्वाइंट न मिलने से बड़ी परेशानी होती है। इसीलिए हम सभी एंड्रॉयड फोन यूजर्स यह चाहते हैं कि उनके फोन की बैटरी कम से कम इतनी देर तक चले की उनके बाहर रहने तक दुबारा उसे चार्ज न करना पड़े या किसी तरह से पूरा दिन चल जाए। लेकिन अक्सर मामलों में ऐसा हो नहीं पाता है। इसके लिए कई कारण जिम्मेदार होते हैं। अभी स्लीम अर्थात पतले फोनों के आने के कारण बैटरी को फोन में रखने की जगह अत्यंत कम हुई है जिसकी वजह से बैटरी अब छोटी हो चली है। इसके अलावा बड़े ब्राइट डिस्प्ले, बैकग्राउंड में चलने वाले अनेक साफ्टवेयर, जीपीएस, रेडियो इत्यादि सब फोन बैटरी की पावर को निरंतर कम करते रहते हैं। लेकिन इनके अलावा भी बैटरी लाइफ कम होने के कई कारण हैं। कुछ तरीके ऐसे हैं जिनसे फोन बैटरी की लाइफ को बढ़ाया जा सकता है।

1. आप देखिए कि आप का फोन गरम तो नहीं हो रहा है। यदि फोन ज्यादा गरम हो रहा है तो वह ज्यादा बैटरी खाएगा। इसलिए सबसे पहले यह देखिए कि किस एप्स को चलाने से वह ऐसा कर रहा है। उसे पता कर उस एप्स को डिलिट कर दीजिए।
2. फोन की सैटिंग्स में जाकर देखिए कि कौन सा एप्स सबसे अधिक बैटरी खा रहा है। उसका ग्राफिकल डिस्प्ले दिखाई देगा। जरूरत नहीं होने से उनको आफ कर दीजिए।
3. कुछ एप्स बैकग्राउंड में व्यर्थ ही चलते रहते हैं तथा कुछ अपने आप खुल जाते हैं इनपर नजर रखिए तथा इन्हें समय समय पर बंद करते रहिए।
4. यदि आप ऐसी जगह है जहां सिगनल बहुत कम मिल रहा है तो आप फोन को जरूरत नहीं होने से बंद कर दीजिए क्योंकि कम सिगनल मिलने के कारण सिगनल सर्च करने के लिए फोन को निरंतर काम करते रहना पड़ेगा और फोन की बैटरी ज्यादा खर्च होगी। सिगनल स्ट्रेंथ पर नजर रखना इसलिए जरूरी है क्योंकि कम सिगनल स्ट्रेंथ आने पर फोन को ज्यादा काम करना पड़ता है।
5. ब्राइटनेस कम करें और ऑटोमेटिक ब्राइटनेस बंद कर दें।
6. एप्स अपडेट करते रहें ऐसा करने से एप्स पावर कम कंज्यूम करेंगे।
7. ईमेल, ट्विटर और फेसबुक पोलिंग को कम करें सभी मैसेजिंग एप्स पर मैनुअल पोलिंग मोड सेट कर दें।
8. बेकार के हार्डवेयर रेडियो आफ करें। एलटीई, एनएफसी, जीपीएस, वाईफाई और ब्लूटूथ में से जो रेडियोज काम नहीं आ रहे हैं उनको आफ कर दें।
9. जबतक फोन की पूरी आवश्यकता न हो तबतक एक्स्ट्रा पावर सेविंग मोड यूज करें। इस मोड को आन करने से वह लिमिटेड काम कर पाता है।
10. फोन ही ऐसा खरीदे जिसके बैटरी की क्षमता तीन हजार एम एच से ऊपर हो। जितनी अधिक क्षमता होगी उतनी देर फोन की बैटरी काम करेगी।

— रीतेश कुमार सिंह

काश यदि में क्रिमिनल होता

काश यदि में क्रिमिनल होता, कड़वी होती वाणी
तुरत-फुरत में आगे बढ़ता जैसे बाढ़ का पानी ।
नाक नरक में भेद न करता होता सबका काम तमाम
अड़्डा बाजी करता हरदम आशव आदि करता पान।
देश में मेरा नाम भी होता अखबारों में पहला पेज
छैल छबीली पोज भी होती सर्व सुलभ संपन्न और तेज ।
शकुनि सी चाल में चलता बन जाता में तुरंत महान
रैली रेला कुछ दिन करता फिर होता मेरा गुणगान ।

सारा जग मुझसे डरता ब्रह्मवाक्य वचन मेरा
हड़ताल बंद और जलूस निकलते मेरे नाम का लगता नारा ।
नेतागण में होड़ सी चलती कहता तुम मेरे साथ चलो
कमी आज तक रही जो बाकी यथाशीघ्र तुम आज भरो।
लोकतंत्र की भीड़ तंत्र में बन जाता मैं सदल सबल
मीडिया मेरे पीछे चलती गढ़ती मेरा इतिहास ध्वला।
लंबा चौड़ा भाषण देता सच्चा झूठा पेंच और दांव
प्रजातंत्र का महापर्व आ जाता फिर नया चुनाव।

फिक्स मेरी सीट होती लड़ता दावे से चुनाव
जीत मेरी पक्की होती गुणगन होता सारा गांव।
विरोधी मेरा ऐसे जलता जैसे आग में भूँजा
नृप किरिट सा ऐसे सजता जस मणि माणिक गूँजा।
भीड़तंत्र की प्रबल वाहिनी चलती मेरे पीछे
मैं बनता आंखों का तारा सारा जग मेरे पीछे।
परम आचरज करता सब जन कहता बड़ा सुजन है
बंटाधार सरकार का करता जन का बड़ा रतन है।

फिर आता तब नया सवेरा बन जाती मेरी सरकार
मैं तो सबल मिनिस्टर बनता चहुँदिशा मेरी जयकार।

जैसे तैसे माल माल बढ़ाता ठेका मेरा सारा राज
भ्रष्ट जनों को गाली देता कहता आया रामराजा।
प्रकाशक मेरे पीछे आता कहता बड़े रोचक हैं आप
आपके जीवन वृत्त की पुस्तक बिक जाएगी रातोंरात।
पक्ष-विपक्ष सभी में चलता मेरा दावा एक समान
पैदा एक दूजे के चरित की चर्चा गुप्त संहिता का सम्मान।

पक्ष हो या हो विपक्ष समवेत स्वर में गाता गान
जनता को देने को धोखा संसद में बनता हनुमान।
काल चक्र का चलता पहिया आता जग का नायक राम
रावणरूपी भीड़ तंत्र का करता जड़ से काम तमाम।
भ्रष्टाचार पर चोट यों पड़ती भेद उभरता सब मेरा
कारागार की दीवारों से चलता संवाद सुघड़ मेरा।
मन में राग विराग पनपता बन जाता मैं एक कवि
संदेशा देता मैं जग को बन जाता मैं यज्ञ हवि।

सद न्याय का द्वार खटकाता रखता नामी एक वकील
दुष्कर्मों पर कील ठोकता बन जाता मैं स्वच्छ सलिल।
साखी चाहिए न्याय तंत्र को इसके बिना सब कुछ निष्फल
साखी देना कौन जो चाहे नहीं हो खाना किसे पत्र फल।
उठो जगो ए वीर जवानों देखो मां रोती है आज
शत के सत में अतुल तेज है बनो निशक्तों की आवाज।
राह कठिन है गढ़ दुर्गम है कांटे भी है हर पग में
पर मिली है मंजिल किसको परमरम्य सुंदर तल में।

भेदभाव और कपट कलेवर कालनेमि का करता जो नाश
लक्ष्य जीव को दे संजीवनी करता दूर जगत का त्रास।।

राजभाषा पखवाड़ा -2016 के दौरान आयोजित पूर्व रेलवे हिन्दी उच्च विद्यालय
साहेबगंज में आशुभाषण प्रतियोगिता के कुछ दृष्य



मालदा मंडल द्वारा स्वच्छता के संबंध में जागरूकता फैलाने के लिए विभिन्न रेलवे स्टेशनों पर किए गए सफाई कार्यक्रम के कुछ दृश्य

